पुना इंटरनेशनल स्कूल

4 कठपुतली : कवि भवानी प्रसाद मिश्र

- **भवानी प्रसाद मिश्र (Bhawani Prasad Mishra, 29 मार्च, 1913 - 20 फ़रवरी, 1985) हिन्दी के प्रसिद्ध कवि तथा गांधीवादी विचारक थे। भवानी प्रसाद मिश्र दूसरे तार-सप्तक के एक प्रमुख कवि हैं। मिश्र जी विचारों, संस्कारों और अपने कार्यों से पूर्णत: गांधीवादी हैं। गाँधीवाद की स्वच्छता, पावनता और नैतिकता का प्रभाव और उसकी झलक भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में साफ़ देखी जा सकती है। उनका प्रथम संग्रह 'गीत-फ़रोश' अपनी नई शैली, नई उद्भावनाओं और नये पाठ-प्रवाह के कारण अत्यंत लोकप्रिय हुआ भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म टिगरिया गांव में, होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में हुआ था। भवानी प्रसाद मिश्र की प्रारंभिक शिक्षा क्रमश: सोहागपुर, होशंगाबाद, नरसिंहपुर और जबलपुर में हुई|**

भवानी प्रसाद मिश्र

शब्दाथ

- कठपुतली- काठ की गुड़िया
- गुस्सा ळ अत्याधिक क्रोध
- पाँवो पर छोड़ दो -स्वंतत्रत कर दो
- मन के छद - मन के भाव

कठपुतली कविता का सारांश (Kathputli Poem Meaning in Hindi): कठपुतली कविता में कवि भवानी प्रसाद मिश्र ने कठपुतलियों के मन की व्यथा को दर्शाया है। ये सभी धागों में बंधे-बंधे परेशान हो चुकी हैं और इन्हें दूसरों के इशारों पर नाचने में दुख होता है। इस दुख से बाहर निकलने के लिए एक कठपुतली विद्रोह के शुरुआत करती है, वो सब धागे तोड़कर अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। अन्य सभी कठपुतलियां भी उसकी बातों से सहमत हो जाती हैं और स्वतंत्र होने की चाह व्यक्त करती हैं। मगर, जब पहली कठपुतली पर सभी की स्वतंत्रता की ज़िम्मेदारी आती है, तो वो सोच में पड़ जाती है।

कविता परिचय

- कठिन शब्द
- शब्दाथ
- कविता-सार
- प्रश्नो के उत्तर लिखिए।
- व्याकरण विभाग
- लेखन-बोध
- साप्ताहिक परीक्षा

प्रश्नो के उत्तर लिखिए

- 1 कठपुतली कविता के कवि का नाम लिखिए
- उ कविता कठपुतली कवि भवानी प्रसाद मिश्र

- 2 कठपुतली किसे तोड देने को कहती है?
- उ धागों को
- 3 कठपुतली को गुस्सा क्यो आया?
- उ उसे दूसरो के इशारो पर नाचना पड़ता है।

व्याकरण
सर्वनाम

सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाने वाले शब्द **सर्वनाम** कहलाते हैं।

जैसे:– मैं, हम, तू, तुम, वह, यह, आप, कौन, कोई, जो आदि।

सर्वनाम के छः भेद होते है:–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम
6. निजवाचक सर्वनाम

प्रश्नवाचक

जिन वाक्यों से किसी प्रकार का प्रश्न पूछने का ज्ञान होता है, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे- सीता तुम कहाँ से आ रही हो? तुम क्या पढ़ रहे हो?

इच्छावाचक

जिन वाक्यों से इच्छा आशीष एवं शुभकामना आदि का ज्ञान होता है, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे- तुम्हारा कल्याण हो। भगवान तुम्हें लंबी उमर दे।

निजवाचक सर्वनाम

. **निजवाचक सर्वनाम**
जिन शब्दों का प्रयोग वक्ता किसी चीज़ को अपने साथ दर्शाने या अपनी बताने के लिए करता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
निजवाचक सर्वनाम के उदाहरण:
जैसे-:
मैं अपने कपडे **स्वयं** धो लूँगा।
मैं वहां **अपने आप** चला जाऊंगा।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम

अनिश्चयवाचक सर्वनाम की परिभाषा
जिन सर्वनाम शब्दों से वस्तु, व्यक्ति, स्थान आदि की निश्चितता का बोध नही होता वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। इसके सर्वनाम के अंतर्गत 'कोई' और 'कुछ' आते हैं।
जैसे: 'कोई' और 'कुछ' आदि सर्वनाम शब्द। इनसे किसी विशेष व्यक्ति अथवा वस्तु का निश्चय नहीं हो रहा है बल्कि अनिश्चितता की स्थिति बनी हुई है। अतः ऐसे शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
अनिश्चयवाचक सर्वनाम के कुछ उदाहरण :
द्वार पर **कोई** खड़ा है।

4.संबंधवाचक सर्वनाम

परस्पर सबंध बतलाने के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- 'जो', 'वह', 'जिसकी', 'उसकी', 'जैसा', 'वैसा' आदि।

उदाहरण

जो सोयेगा, सो खोयेगा; जो जागेगा, सो पावेगा।

जैसी करनी, तैसी पार उतरनी।

गतिविधि

- कठपुतली का चित्र चिपकाइए और उस पर पाँच वाक्य
- लिखिए